

साँग स्त्री. (देश.) 1. लोहे के टंड वाली छोटी पतली बछ्छी 2. एक प्रकार का औजार जो कुएं में पानी का सोता खोलने के काम आता है 3. भारी बोझ उठाने या खिसकाने के काम में आने वाला एक प्रकार का डंडा टि. साँग लगभग 8 फुट लंबी होती है और इसका सिरा लगभग ढाई फुट लंबा और पतला होता है पुं. स्वाँग, एक प्रकार का गीत काव्य।

साँगर पुं. (देश.) शमी वृक्ष।

साँगरी स्त्री. (देश.) कपड़े रँगने का एक प्रकार का रंग जो जंगार अर्थात् तूतिये से निकाला जाता है।

साँगी पुं. (देश.) वह जो साँग नामक गीत काव्य लोगों को सुनाता हो स्त्री. छोटी साँग (बछ्छी) स्त्री. (तद्.) 1. बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान 2. एकके, गाड़ी आदि में जाली का वह छींका जिसमें छोटी-छोटी आवश्यक चीजें रखी जाती हैं।

साँच वि. (तद्.) सत्य, ठीक पुं. सच्ची बात स्त्री. (साँची)-सच्ची।

साँचना स.क्रि. (तद्.) 1. संचित या एकत्र करना 2. किसी चीज में भरना अ.क्रि. (देश.) किसी बड़े का कहीं आना, पदार्पण करना, पधारना उदा. सामलो घरे नू म्हारे साँचु मीराँ।

साँचर नमक वि. (देश.) काला नमक, सौवर्चन लवण।

साँचला वि. (तद्.) जो सच बोलता हो, सच्चा, सत्यवादी वि. (स्त्री.) साँचली- सत्यवादिनी, सच्ची।

साँचा पुं. (तद्.) वह ढाँचा, उपकरण जिसमें कोई गीली चीज भरकर विशेष रूप की वस्तुएँ ढालते हैं, छोटा नमूना, कपड़े आदि पर फूल आदि छापने का लकड़ी का ठप्पा वि. सच्चा, सत्यवादी, सच बोलने वाला मुहा. साँचे में ढला, साँचे में ढका सा- सुगठित/सुडौक, अति सुंदर रूप वाला; साँचे में ढलना- अत्यंत सुंदर होना; साँचे में ढालना- सुगठित बनाना, सुडौल बनाना, बहुत सुंदर रूप वाला बनाना।

साँचिया पुं. (देश.) साँचा बनाने वाला कारीगर, साँचे में कोई चीज ढालने वाला।

साँचिला वि. (देश.) सच्चा उदा. एक सनेही साँचिलो कोसल पालु-विनय, तुलसी।

साँची पुं. (तद्.) एक तरह का पान और उसकी बेल 2. साँची नगर स्त्री. छपाई का एक प्रकार जिसमें पंक्तियाँ बेंडे अर्थात् लंबाई के बल छापी जाती थी।

साँझ स्त्री. (तद्.) संध्या, सायंकाल, सूर्यास्त के कुछ पहले तथा कुछ बाद तक का समय, शाम मुहा. साँझ फूलना।

साँझ-पाती स्त्री. (तद्.) भागीदारी, हिस्सेदारी, किसी वस्तु का बंटवारा।

साँझला पुं. (देश.) एक हल से दिन भर में जोती जा सकने वाली भूमि।

साँझा पुं. (तद्.) साझा।

साँझी स्त्री. (तद्.) एक लोक कला, रंगोली, अल्पना पुं. साँझेदार टि. मंदिर में देवमूर्ति के सामने चौक पूरने जैसी की जाने वाली फूलों की सजावट, यह सजावट विशेषकर पितृपक्ष में शाम को ही की जाती है 2. प्रायः स्त्रियों में प्रचलित एक लोककला जिसमें त्योहारों आदि पर घरों और मंदिरों की भूमि या फर्श पर रंगीन चूर्णों, अनाज के दानों, भूसी तथा फूल पत्तियों से बेलबूटों, पशु-पक्षियों या दूसरे पदार्थों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं, गुजरात में इसे साथिया, महाराष्ट्र में रंगोली, बंगाल में अल्पना तथा दक्षिण भारत में कोलम् कहते हैं।

साँझेदार पुं. (देश.) दे. साँझेदार।

साँट स्त्री. (तद्.) छड़ी, कोड़ा, छड़ी की चोट का निशान स्त्री. (हि. सटना) 1. सटने की क्रिया या भाव, किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी से किया जाने वाला मेल, संलग्नता।

साँटना स.क्रि. (तद्.) पुरानी खाट में स्थान-स्थान की टूटी रस्सी या टूटे बानों को जहाँ-तहाँ रस्सी या बानों से बुनकर ठीक कर देना।